सेब

रोग

सेब पपड़ी (वेनतूरिया इनाक्वालिस):

सेब पपड़ी पत्तों और फलों दोनों को प्रभावित करती है। फल-स्परों पर उगने वाले पत्तों की निचली सतह पर बिखरे हुए, गोलाकार भूरे या जैतूनी-हरे रंग के धब्बे दिखाई देते हैं। प्रारंभ में लीशन पत्ते के बड़े हिस्से को कवर करता है जोकि समय से पहले पत्तों के पीला होने, पतझड़ और फल गिरने का प्रमुख कारण है। मौसम के शुरूआत में, ये धब्बे प्राय: ब्लासम एंड (केलिक्स एंड) के चारों ओर विकसित होते हैं और बाद में फल की सतह पर कहीं भी पाए जाते हैं। दरारें प्राय: खुरंडदार क्षेत्रों में विकसित होते हैं, जोकि अन्य रोगजनकों, फल की सड़ांध को प्रवेश करने देते हैं।

नियंत्रण : पपड़ी रोग के प्रभावी नियंत्रण के लिए अनुशंसित छिड़काव समयसारिणी निम्न प्रकार है -

अवस्था	फफूँदनाशी/100 लिटर पानी
सिल्वर टिप-ग्रीन टिप	मेनकोजेब (400 ग्रा.)/कपटन (300 ग्रा.)
पिंक बड	कोन्टाफ (30 मि.ली.)/बेकोर (50 ग्रा.)
पेटल फाल	बेविस्टिन (50 ग्रा.)/टोपसिन एम (50 ग्रा.)
पी स्टेज़	मैनकोजेब (300 ग्रा.)/कपटन (300 ग्रा.)
फल विकास	बेविस्टिन + मैनकोज़ेब (25+250 ग्रा.)
कटाई से 15-20 दिन पहले	मैनकोजेब (300 ग्रा.)
पत्ते गिरने से पहले	यूरिया (5 कि.ग्रा.)

(आईसीएआर : 50 इयर्स ऑफ क्रॉप साइंस रिसर्च इन इंडिया, 1996)

फायर ब्लाइट (एरविनिया एमिलोवोरा) :

यह रोग बैक्टीरिया की वजह से होता है। इसके लक्षण संक्रमित पौध भागों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के अग्नि जैसे निशान दिखाई देते हैं। नई टहनियां संक्रमण के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होती हैं। भूरा हुए बिना टहनी के सिरों का शिथिलन और मुरझाना। सुनहरे रंग के जिवाणुकीय गाद का स्राव स्टेम पर देखा जाता है। फलों में परिगलित धब्बे और रिसने वाले जरब फलों की सतह की बाहरी परत पर देखे जा सकते हैं।

नियंत्रण: दुष्प्रभावित पेड़ और पोषक (होस्ट) पौधे एकत्र किए जाने चाहिएं और आग-क्षति की घटना को ध्यान में रखते हुए तत्काल जला दिया जाना चाहिए। सेब के वसंत पुष्पन में संक्रमण को स्ट्रेपटोमाइसिन के छिड़काव से नियंत्रित किया जा सकता है।

पाउडरी माइल्डयू (पोडोस्फेरिया ल्यूकोट्रिचा):

पाउडरी माइल्डयू एक गंभीर रोग है जो कलियों, नई टहनियों और पत्तों को प्रभावित करता है। यह रोग शुष्क जलवायु में दिखाई देता है। नर्सरी पौधों को यह रोग अधिक होता है। इस रोग को पत्तों के दोनों सिरों पर धब्बों में सफेद पाउडरी (राख जैसा) परत की मौजूदगी और तरूण टहनियों द्वारा वर्णन किया जा सकता है। प्रभावित पत्ते पीले और मुड़ जाते हैं। प्रभावित टहनियां कमजोर और अपरिपक्व रह जाती हैं। गंभीर संक्रमण के मामले में, पतझड़ और समय से पहले फल गिर सकते हैं। तरूण संक्रमित फल गेरूआपन का संकेत दर्शाता है।

नियंत्रण: रोग होने की घटनाओं को छंटाई करके और प्रभावित पौध हिस्सों को नष्ट करके कम किया जा सकता है। नर्सरियों में, 7 दिनों के अंतराल पर बेलिटन (500 पीपीएम) का तरूण अंकुरों पर छिड़काव इस रोग को नियंत्रित करता है। क्षेत्र में, कवकनाशी छिड़काव प्रभावित पौध हिस्सों की छंटाई के बाद किया जाना चाहिए। फसल पर सल्फर (0.3 प्रतिशत) अथवा कारबेनदाज़िम (0.05 प्रतिशत) अथवा काराथेन (0.05 प्रतिशत) का छिड़काव रोग को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करता है।